Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 44–2025] CHANDIGARH, WEDNESDAY, OCTOBER 29, 2025 (KARTIKA 7, 1947 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 27 अक्तूबर, 2025

संख्या 12/249–2021/पुरा/4295–4302.— हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (3) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, अधिसूचना संख्या 12/249–2021/पुरा/2293–2302, दिनांक 15 मई, 2025 के प्रतिनिर्देश से, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में यथा विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करते हैं:–

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
सोहना का किला 1700–1857 ई0, 18 शताब्दी पूर्व	सोहना का किला 1700–1857 ई0, 18 शताब्दी पूर्व	सोहना	गुरूग्राम	खतौनी संख्या 1707, 1728 किला संख्या 20, 6, 7, 14, 15, 16	6–11 8–0 8–0 8–0 8–0 8–0 ——— 46–11	हरियाणा सरकार (अभिरक्षक पर्यटन विभाग, हरियाणा)	सोहना शहर का नाम सोने की धूल से पड़ा है, जो कथित तौर पर भारी बारिश के बाद पास की नदियों के तल में पाई गई थी। ऐतिहासिक रूप से, इस शहर पर तीन प्रमुख समुदायों–कम्भो, कंजादास और राजपूतों का क्रमिक कब्जा रहा। प्रत्येक शासक गुट ने क्षेत्र को मजबूत करने के लिए रणनीतिक प्रयास किए, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न रक्षात्मक संरचनाओं और किलों का निर्माण हुआ। सोहना किला सोहना शहर के ऊपर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है, जो रणनीतिक रूप से अरावली पहाड़ियों की ओर जाने वाले एक प्रमुख सड़क जंक्शन पर स्थित है। आइन–ए–अकबरी के अनुसार, सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान सोहना की पहाड़ियों पर एक किला मौजूद था। एक अन्य किला (गढ़ी), जिसके बारे में माना जाता है कि इसका निर्माण कम्भो सरदारों ने किया था, नागली रोड शहर के पश्चिम में स्थित था। इस किलेबंदी के निशान, जिनमें तख्तों की पत्थर की दीवारें और आंशिक रूप से दिखाई देने वाली एक घेरने वाली दीवार शामिल है, आज भी मौजूद हैं। यह किला 18वीं शताब्दी में

							राव रामबख्श द्वारा पुराने खानजादा और राजपूत नींव पर पुनर्निर्माण का समय है। बचे हुए अवशेष ज्यादातर पत्थर की दीवारों के हिस्से और एक बुर्ज है। इसका निर्माण हरियाणा सरकार के पारंपरिक मध्ययुगीन किलों की तरह पत्थर के मलबे की चिनाई से हुआ था। कृकोनों को निगरानी और सुरक्षा के लिए चौड़ी पत्थर की दीवारों और बुर्जों से मजबूत किया गया था। दीवारें अंदर की ओर झुकी हुई हैं और उनके ऊपर किलेनुमा प्राचीरें हैं, उनकी मोटाई संभवतः हमलों और घेराबंदी की रणनीति का विरोध करने के लिए बनाई गई थी। मुख्य निर्माण में स्थानीय क्वार्टजाइट और लाल बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया था और दीवारें संभवतः चूने के गारे से मढ़ी गई थी। बाद में भरतपुर के शासकों ने पहाड़ियों के ऊपर एक किले का निर्माण भी किया। हालांकि, निर्माण कभी पूरा नहीं हुआ, इस किले के अधूरे अवशेष अभी भी मौजूद हैं, जो इस क्षेत्र पर जाट शासन की याद दिलाते हैं। 1600 के दशक में, राव राजा राम सिंह ने सरकार रेवाड़ी के फौजदार के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान किले को संभाला था। आइन–ए–अकबरी के अनुसार, सरकार रेवाड़ी में तब 12 महल शामिल थे, जिनमें से एक सोहना था। राव राजा गूजरमल सिंह बहादुर (1739–1750ई0) के शासनकाल के दौरान, रेवाड़ी के क्षेत्र पूर्व की ओर यमुना नदी तक विस्तारित हुए, जिसमें सोहना परगना भी शामिल था। बाद में, किले पर राव गूजरमल सिंह बहादुर के भतीजे राव गंगा बिशन का कब्जा था। बाद में उन्होंने यह किला अपने भाई, धारूहेड़ा के राव रामबख्श को आबंटित कर दिया, जिनके पास धारूहेड़ा और सोहना की जागीर थी और वे राव तेज सिंह बहादुर की सरकार में सेना प्रमुख के रूप में कार्यरत थे। बाद में राव रामबख्श ने किले का पुनर्निर्माण कराया और सोहना किले की वर्तमान संरचना उनके प्रयासों का प्रमाण है।

कला रामचंद्रन,
प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 27th October, 2025

No. 12/249-2021/pura/4295-4302.— In exercise of the powers conferred under sub-section (3) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964) and with reference to Haryana Government, Heritage and Tourism Department, notification No. 12/249-2021/pura/2292-2302, dated the 15th May, 2025, the Governor of Haryana hereby declares the ancient and historical monument specified in column 1 of the Schedule given below to be a protected monument and archaeological site and remains as specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be a protected area:-

SCHEDULE

Name of ancient and historical monument	Name of archaeological sites and remain	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection.	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2		4	5	6	7	8
Fort of Sohna 1700-1857 CE, 18thCentury CE	Fort of Sohna 1700-1857 CE, 18thCentury CE	Sohna	Gurugram	Khotni No. 1707, 1728 Kila No. 20, 6, 7, 14, 15, 16	6-11 8-0 8-0 8-0 8-0 8-0 ------- 46-11	Government of Haryana (Custodian Tourism Department, Haryana)	The town of Sohna derives its name from the gold dust that was reportedly found in the beds of nearby streams following heavy rains. Historically, the town witnessed successive occupation by three major communities- the Kambhos, Kanzadas, and Rajputs. Each ruling faction made strategic efforts to fortify the area, leading to the constructions of various defensive structures and forts. The Sohna fort is located on a small hillock overlooking

							Sohna town, strategically positioned at a key road junction leading to the Aravalli hills. According to the Ain-i-Akbari, a fort existed on the hills of Sohna during the reign of Emperor Akbar. Another fortress (Garhi), believed to have been constructed by Kambho chiefs, was located to the west of the town of Nagli Road. Traces of this fortification, including board stone walls and a partially visible enclosing wall, still survive today. The fort dates to 18th century rebuilding by Rao Rambaksh, over older Khanzada and Rajput foundations. The surviving remains are mostly portions of stone walls and a single bastion. It was built using stone rubble masonry, typical of conditioned medieval forts in Haryana-corners fortified with broad stone walls and bastions for surveillance and defense. Walls slope inward and are capped with battlements; their thickness likely intended to resist attacks and siege tactics. Primary construction utilized local quartzite and red sandstone and walls were likely clad in lime mortar. Later the rulers of Bharatpur also constructed a fort atop the hills, Although the construction was never completed, the unfinished remains of this fort still exist, serving as a reminder of the Jat rule over the area. In the 1600s, Rao Raja Ram Singh held the fort during his tenure as Faujdar of Sarkar Rewari. As per the Ain-i-Akbari, Sarkar Rewari then comprised 12 mahals, one of which was Sohna. During the reign of Rao Raja Gujarmal Singh Bahadur (1739-1750AD), the territories of Rewari expanded eastward to the Yamuna River, thereby including the Sohna Pargana. Later, the fort was held by Rao Ganga Bishan, nephew of Rao Gujarmal Singh Bahadur. He successfully defended the fort against an invasion led by George Thomas. The fort, then in a state of ruin, came into the possession of Rao Raja Tej Singh Bahadur, grandfather of Rao Raja Tula Ram. He subsequently allotted the fort to his brother, Rao Rambaksh of Dharuhera, who held the jagir of Dharuhera and Sohna and served as the army chief under Rao Tej Singh Bahadur's government. Rao Rambaksh later rebuilt the fort, and the current structure of Sohna Fort stands as a testament to his effort.

KALA RAMACHANDRAN,
Principal Secretary to Government Haryana,
Heritage and Tourism Department.

12188—C.S.—H.G.P., Pkl.